सत्साहस

गणेश शंकर विद्यार्थी

संसार के सभी महापुरुष साहसी थे । संसार के काम, बड़े अथवा छोटे, साहस के बिना नहीं होते । बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाए किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता । अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में बसे हैं ।

साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं । क्रोधांध होकर स्वार्थवश साहस दिखाने को किसी प्रकार प्रशंसनीय कार्य नहीं कहा जा सकता । इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुजरते हैं । राजा-महाराजा भी अपनी कुत्सित अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर डालते हैं । ऐसा साहस निम्न श्रेणी का साहस है । इस साहस को किसी भी दृष्टिकोण से सत्साहस नहीं कहा जा सकता ।

मध्यम श्रेणी का साहस प्राय: शूरवीरों में पाया जाता है । वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है । इस प्रकार के साहसी मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परंतु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है ।

एक बार बादशाह अकबर के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आए । अकबर ने उनसे पूछा, ''तुम क्या काम कर सकते हो ?''

वे बोले, ''जहाँपनाह, करके दिखलाएँ या केवल कहकर ?''

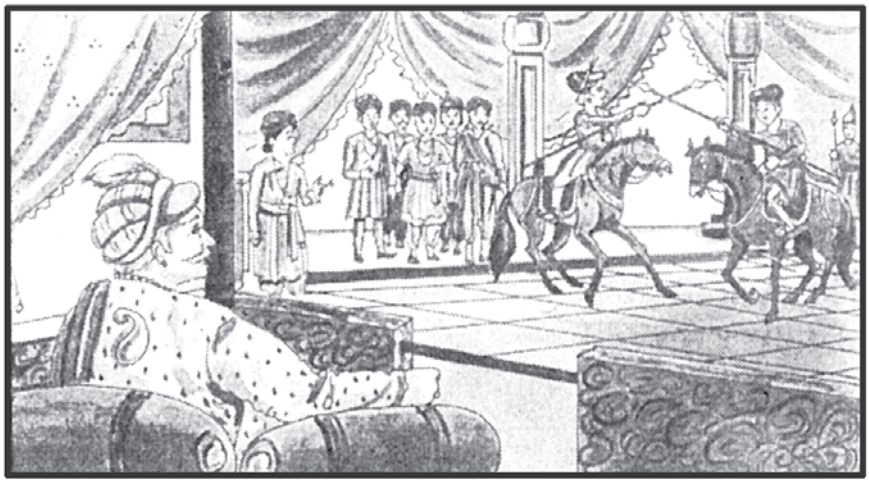

बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी । राजपूतों नें घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे । बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मरकर ठंडे हो गए । इस प्रकार का साहस निस्संदेह प्रशंसनीय है परंतु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है ।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ· पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं और न ही धन-मान आदि का होना आवश्यक है । जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे हैं-हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता । ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो । इस गुण का नाम है, 'कर्त्तव्यपरायणता' ।

कर्त्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए । कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य उत्पन्न होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्त्तव्य किया । मारवाड़ के मौरुदा गाँव का जमींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया । थोड़े ही दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया । यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिलकुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा । वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरंत चल पड़ा । वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा करने के लिए पहुँच गया ।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गए परंतु आज भी मारवाड़ के लोग कर्तव्यपरायण बुद्धन सिंह की वीरता व सत्साहस को सम्मानपूर्वक याद करते हैं । राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके वीर साथियों की वीरता के गीत गाती हैं ।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है । धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के ही लिए नहीं, अपितु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है । अपने प्राणों की वह लेशमात्र भी परवाह नहीं करता । हर प्रकार के क्लेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता है और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है ।

सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है । सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में, आया करता है । देश, काल और कर्तव्य पर विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए । यही सत्साहस है ।

विचारबोध :- यह एक विचार प्रधान लेख है । इस लेख में सत्साहस की परिभाषा देते हुए उसके विभिन्न स्वरूपों की चर्चा की गई है, साथ ही दुस्साहस और सत्साहस में अन्तर बताया गया है ।

- शब्दार्थ -

अभीष्ट - लक्ष्य, उद्देश्य । आक्रमण - वार, हमला । आभा - चमक, रोशनी । कर्त्तव्यपरायण - उचित काम करने वाला । कुत्सित अभिलाषा - बुरी व गलत इच्छा । क्लेष - कष्ट । निर्भीकता - निडरता । बलिष्ठता- मजबूती । शूरवीर - बहादुर ।

प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) लेखक के अनुसार साहस कितने प्रकार के होते हैं ? समझाइए ।

(ii) मध्यम श्रेणी का साहस किसे कहा गया है ? इस प्रकार के साहस को सत्साहस क्यों नहीं कहा जा सकता ? अपने विचार लिखिए ।

(iii) बुद्धन सिंह कौन था ? मारवाड़ के लोग आज भी सम्मानपूर्वक उसे क्यों याद करते हैं ?

2. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) लेखक के अनुसार किसी देश का इतिहास कब बन सकता है ?

(ii) सर्वोच्च श्रेणी के साहस में किन-किन गुणों का होना आवश्यक है ?

(iii) लगभग पचास शब्दों में सत्साहस के बारे में अपने विचार लिखिए ।

(iv) निम्नश्रेणी के साहस को सत्साहस क्यों नहीं कहा जा सकता ?

3. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) संसार के सभी महापुरुष कैसे थे ?

(ii) हमारे हृदय में कैसे महापुरुष बसे हैं ?

(iii) साहस कब निस्तेज प्रतीत होता है ?

(iv) 'सत्साहस' किस प्रकार का लेख है ?

(v) इस पाठ के लेखक का नाम बताइए ।

(vi) सत्साहसी व्यक्तियों के दो प्रमुख गुणों का उल्लेख कीजिए ।

(vii) सत्साहसी व्यक्ति किन विचारों को अपने पास फटकने नहीं देता ?

(viii) जमींदार बुद्धन सिंह कहाँ का रहने वाला था ?

भाषा ज्ञान :

4. **क्रिया विशेषण** - जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं ।

क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं । कालवाचक (कब), स्थानवाचक (कहाँ), परिमाणवाचक (कितना), रीतिवाचक (कैसे) ।

नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया विशेषण को रेखाकिंत करते हुए उनके भेद बताइए —

(i) दोनों राजपूत जोर-जोर से तलवार चलाने लगे ।

(ii) जल्दी ही दोनों जमीन पर गिर पड़े ।

(iii) बुद्धन सिंह वहाँ जाकर बस गया ।

(iv) सत्साहस हमारी निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है ।

5. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए—**

नौकर, सेठ, महोदय, छात्र, शिष्य, रूपवान, श्रीमान, गायक, लेखक, नायक

6. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए—**

प्रशंसा, क्रोध, स्वार्थ, निम्न, प्रकट, साहसी, उदार, पवित्र

7. **निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों को दो भिन्न-भिन्न अर्थों में एक ही वाक्य में प्रयुक्त कीजिए -**

जैसे - कर - अपने कर से कर जमा करके आ रहा हूँ ।

शब्द - कल, काम, पर, गुण, पल ।

8. वाक्यों में सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को छाँटकर कोष्ठक में लिखिए -

(i) गीता नहा रही है । ( )

(ii) रमेश पत्र लिखेगा । ( )

(iii) मीना रोटी पकाती है । ( )

(iv) महेश सोया है । ( )

(v) महेश पलंग पर बैठा है । ( )

9. सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(i) कर्त्तव्य का विचार ..... अपना कर्त्तव्य किया ।

(ii) सत्साहसी व्यक्ति में ..... प्रस्तुत हो जाता है ।

(iii) सत्साहस दिखाने का ..... यही सत्साहस है ।

(iv) सर्वोच्च श्रेणी के साहस ..... और चरित्र की दृढता ।

10. ऐसे महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़िए जो अपनी वीरता के कारण चिरस्मरणीय हैं ।

एक पत्र : इंदिरा के नाम

नैनी जेल, 1930

प्रिय इंदिरा,

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो। मैंने इरादा किया है कि मैं कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उसके छोटे-बड़े देशों की कथाएँ लिखा करूँगा ।

पुराने जमाने में शहरों और गाँवों में किस तरह के लोग रहते थे ? उनका कुछ हाल उनके बनाये हुए बड़े-बड़े मकानों और इमारतों से मालूम होता है । कुछ उन पत्थर की तख्तियों की लिखावट से भी मालूम होता है, जो वे छोड़ गए हैं । इसके अतिरिक्त बहुत पुरानी किताबें भी हैं जिनमें उस समय के बारे में ज्ञान होता है ।

मिस्र में अब भी बड़े-बड़े मीनार और 'स्फिंक्स' मौजूद हैं । लक्सर और दूसरी जगहों में भव्य मंदिरों के खंडहर नज़र आते हैं । तुमने इन्हें देखा नहीं है लेकिन जिस वक्त हम स्वेज नहर से गुजर रहे थे, वे हमसे बहुत दूर न थे । शायद तुम्हारे पास उनकी तस्वीरों के पोस्टकार्ड मौजूद हों । 'स्फिंक्स' औरत के सिरवाली शेर की मूर्ति को कहते हैं । इसका डीलडौल बहुत बड़ा है । किसी को यह नहीं मालूम कि यह मूर्ति क्यों बनाई गई । उस औरत के चेहरे पर एक अजीब मुरझाई हुई मुस्कराहट है और किसी की समझ में नहीं आता कि वह इस तरह क्यों मुस्करा रही है ।

तुम तो जान ही गई होगी कि आज मैं तुम्हें मिस्र देश के बारे में बताने जा रहा हूँ । मिस्र में बनी मीनारें बहुत लंबी-चौड़ी हैं । वास्तव में वे मिस्र के पुराने बादशाहों के मकबरे हैं जिन्हें 'फ़िरऊन' कहते थे । तुम्हें याद है कि तुमने लंदन के अजायबघर में मिस्र की 'ममी' देखी थी ? 'ममी' किसी